IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 3, February 2026 Impact Factor: 8.2

डिजिटल युग में नैतिक शिक्षा: भारतीय शिक्षा प्रणाली में अवसर और चुनौतियाँ

डॉ. अलका सक्सेना
प्रोफेसर शिक्षक शिक्षा विभाग
डी.बी.एस. कॉलेज कानपुर

भास्कर शुक्ला
शोधार्थी शिक्षक शिक्षा विभाग
डी.बी.एस. कॉलेज कानपुर

bksm12267@gmail.com

सारांश

डिजिटल युग ने शिक्षा को नई दिशा और गति दी है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने ज्ञानार्जन के अवसरों को तो बढ़ाया है, लेकिन इसके साथ-साथ नैतिकता, मूल्यों और चरित्र निर्माण से जुड़ी चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं। साइबर बुलिंग, फेक न्यूज़, डिजिटल लत और सोशल मीडिया पर असंवेदनशीलता जैसी समस्याओं ने विद्यार्थियों के मानसिक और नैतिक विकास को प्रभावित किया है। वहीं, यही तकनीक ई-लर्निंग, मूल्य-शिक्षण ऐप्स और गेमिफिकेशन जैसे नए साधन भी लेकर आई है, जिनसे नैतिक शिक्षा को आधुनिक और रोचक बनाया जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए नैतिक शिक्षा को पुनः केंद्र में रखा है, जिसमें सत्य, प्रेम, अहिंसा, शांति और धर्मात्मकरिता जैसे सार्वभौमिक मूल्यों को प्रमुख स्थान दिया गया है। यह शोधपत्र डिजिटल युग में नैतिक शिक्षा की अवधारणा, वर्तमान स्वरूप, चुनौतियों और अवसरों का विश्लेषण करता है, साथ ही शिक्षक, परिवार और समाज की भूमिकाओं पर भी प्रकाश डालता है।

मुख्य शब्द: नैतिक शिक्षा, डिजिटल युग, मूल्य शिक्षा, NEP 2020, शिक्षक प्रशिक्षण, साइबर बुलिंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता

भूमिका

नैतिक शिक्षा केवल ज्ञान का हस्तांतरण नहीं है; यह मानव जीवन को दिशा देने वाली शक्ति है। यह शिक्षा व्यक्ति को अच्छा नागरिक, संवेदनशील मनुष्य और जिम्मेदार समाज का सदस्य बनने की प्रेरणा देती है। प्राचीन भारत में गुरुकुल परंपरा इस दृष्टि से अत्यंत समृद्ध थी — जहाँ शिक्षा केवल पाठ्य विषयों तक सीमित न होकर जीवन मूल्य, आत्मानुशासन, सेवा भाव और करुणा से जुड़ी थी। (हसन, 2023)

परंतु आधुनिक युग में, विशेष रूप से डिजिटल क्रांति के बाद, शिक्षा का स्वरूप तेजी से बदला है। अब विद्यार्थी इंटरनेट, मोबाइल और सोशल मीडिया के माध्यम से असीमित सूचना तक पहुँच रखते हैं। यह सूचना-समृद्धता यदि विवेक और नैतिकता से नियंत्रित न हो तो भ्रामक सिद्ध हो सकती है । (UNESCO, Digital learning and transfromation of education, 2024) इसीलिए आज के समय में नैतिक शिक्षा पहले से कहीं अधिक आवश्यक हो गई है।

यह शोध इस बात की खोज करता है कि डिजिटल युग में नैतिक शिक्षा की प्रासंगिकता कैसे बनी हुई है, किन-किन रूपों में इसे भारतीय शिक्षा प्रणाली में शामिल किया जा सकता है, और किस प्रकार शिक्षक, परिवार एवं समाज इसके संवर्धन में भूमिका निभा सकते हैं।

नैतिक शिक्षा की अवधारणा और उसका महत्त्व

नैतिक शिक्षा वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति में सही और गलत का भेद करने की क्षमता विकसित करती है। यह छात्रों में ईमानदारी, करुणा, सहिष्णुता, संयम और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों का विकास करती है। भारतीय दार्शनिक परंपरा में शिक्षा का अर्थ केवल 'विद्या' अर्जन नहीं, बल्कि 'संस्कार' प्राप्त करना था।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-31314

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 3, February 2026 Impact Factor: 8.2

आचार्य विनोबा भावे के अनुसार – "शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में आत्मबोध और सेवा भावना का जागरण है" (भावे, 1950, जैसा कि (शिवेन्दु कुमार राय, 2025) में उद्धृत)।

गुरुकुलों में गुरु का जीवन स्वयं नैतिकता का उदाहरण होता था। शिक्षा का लक्ष्य 'सत्यमेव जयते' के आदर्श को आत्मसात करना था। विद्यार्थी में अनुशासन, विनम्रता और समाज सेवा की भावना को सर्वोपरि माना जाता था। वर्तमान में जब समाज उपभोक्तावादी और प्रतिस्पर्धी बन गया है, नैतिक शिक्षा का अभाव अनेक सामाजिक समस्याओं का कारण बना है। भ्रष्टाचार, हिंसा, असहिष्णुता और डिजिटल अपराधों की जड़ में मूल्य-शिक्षा की कमी स्पष्ट दिखाई देती है। (कुमार, 2024) इसीलिए नैतिक शिक्षा न केवल स्कूलों में बल्कि परिवार और समाज में भी उतनी ही आवश्यक है।

डिजिटल युग की विशेषताएँ और उसका प्रभाव

21वीं सदी को डिजिटल क्रांति का युग कहा जा सकता है। आज इंटरनेट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सोशल मीडिया और ऑनलाइन शिक्षण ने दुनिया को एक "वैश्विक कक्षा" में बदल दिया है। (UNESCO, Digital learning and transfromation of education, 2024)

डिजिटल युग की प्रमुख विशेषताएँ हैं —

1. ज्ञान का लोकतंत्रीकरण : हर व्यक्ति किसी भी समय, कहीं से भी जानकारी प्राप्त कर सकता है।
2. ऑनलाइन शिक्षा और MOOCs: स्वाध्याय और लचीले शिक्षण की सुविधा बढ़ी।
3. सामाजिक जुड़ाव: सोशल मीडिया ने संवाद और नेटवर्किंग को सरल बनाया।
4. व्यक्तिगत शिक्षण : AI और एल्गोरिदम विद्यार्थियों की आवश्यकता अनुसार सामग्री उपलब्ध कराते हैं।

इन सभी सकारात्मक पहलुओं के साथ नकारात्मक प्रभाव भी जुड़े हैं —

इंटरनेट पर झूठी खबरें और नफरत फैलाने वाली सामग्री ने सामाजिक समरसता को चुनौती दी। (UNESCO, 2025) साइबर अपराध, ट्रोलिंग और गेमिंग की लत ने युवाओं की संवेदनशीलता कम की। (शर्मा, 2025) स्क्रीन टाइम बढ़ने से वास्तविक जीवन के संवाद घटे, जिससे सामाजिक नैतिकता कमजोर हुई।

इस प्रकार, डिजिटल युग ने ज्ञान के विस्तार के साथ-साथ नैतिकता की परीक्षा भी ली है।

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में नैतिक शिक्षा का वर्तमान स्वरूप

भारत की आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में नैतिक शिक्षा की स्थिति संतोषजनक नहीं कही जा सकती। अधिकांश विद्यालयों में मूल्य शिक्षा वैकल्पिक या सहायक विषय के रूप में पढ़ाई जाती है, जबकि यह पाठ्यक्रम का मूल भाग होना चाहिए। (हसन, 2023)

मुख्य चुनौतियाँ:

- प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षा-उन्मुख शिक्षण से मूल्य शिक्षा को समय नहीं मिलता।
- शिक्षकों में नैतिक शिक्षण के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण का अभाव। (NCTE, 2023)
- डिजिटल सामग्री में नैतिक दृष्टिकोण का समावेश नहीं।

फिर भी, कुछ सकारात्मक परिवर्तन भी हो रहे हैं। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा (NCF-2023) और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) दोनों ही शिक्षा के उद्देश्यों में "मूल्य-आधारित शिक्षण" को शामिल कर चुकी हैं। कई राज्यों में "सप्ताहिक नैतिक पाठ" या "मूल्य-आधारित प्रार्थना सत्र" शुरू किए गए हैं। दिल्ली, राजस्थान

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 3, February 2026 Impact Factor: 8.2

और केरल जैसे राज्यों में "हैप्पीनेस करिकुलम" तथा "नैतिकता और जीवन कौशल पाठ्यक्रम" के प्रयोग हुए हैं, जिनके परिणाम उत्साहजनक रहे हैं। (शिवेन्दु कुमार राय, 2025)

डिजिटल माध्यमों में नैतिकता की चुनौतियाँ

चुनौती विवरण और प्रभाव

- साइबर बुलिंग छात्रों के बीच ऑनलाइन धमकी या अपमान। यह आत्मसम्मान और मानसिक स्वास्थ्य पर विपरीत असर डालता है। (शर्मा, 2025)
- फेक न्यूज़ और दुष्प्रचार झूठी सूचनाओं के प्रसार से सामाजिक विश्वास कमजोर होता है। (UNESCO, 2025)
- डिजिटल लत अत्यधिक स्क्रीन टाइम से नैतिक-सामाजिक व्यवहार प्रभावित होता है।
- गोपनीयता और डेटा सुरक्षा ऑनलाइन डेटा चोरी और निजता उल्लंघन एक नई नैतिक चुनौती है।
- डिजिटल असमानता ग्रामीण-शहरी, अमीर-गरीब वर्गों के बीच तकनीकी पहुंच में अंतर से समान अवसर बाधित होते हैं।

इन समस्याओं के समाधान के लिए शिक्षा में "डिजिटल साक्षरता + नैतिकता" का समन्वय आवश्यक है। (UNESCO, 2025)

नैतिक शिक्षा के डिजिटल अवसर

तकनीक स्वयं कोई बुराई नहीं; उसका उपयोग दिशा और उद्देश्य पर निर्भर करता है। यदि सही रूप से प्रयोग किया जाए, तो यही डिजिटल माध्यम नैतिक शिक्षा के शक्तिशाली साधन बन सकते हैं।

1. ई-कंटेंट और ऑनलाइन पाठ्यक्रम: SWAYAM, DIKSHA, NPTEL जैसे सरकारी प्लेटफॉर्म मूल्य शिक्षा के पाठ्यक्रम प्रदान कर रहे हैं। (भारत सरकार,शिक्षा मंत्रालय , 2024) विद्यार्थी घर बैठे नैतिक कहानियाँ, जीवन प्रसंग और सामाजिक उदाहरणों के माध्यम से सीख सकते हैं।
2. मूल्य शिक्षा ऐप्स: जैसे "MiVirtue", "MoralStories4Kids", और "ThinkRight" जैसे ऐप्स बच्चों को कहानी, क्विज़ और वीडियो के जरिए नैतिक मूल्य सिखाते हैं। (kumar, 2025)
3. गेमिफिकेशन: खेल आधारित शिक्षण में विद्यार्थी "रोल-प्ले", "टीम वर्क" और "सहयोग" के मूल्य व्यावहारिक रूप से सीखते हैं।
4. वर्चुअल समुदाय और सोशल मीडिया अभियान: #BeKind या #DigitalCitizenship जैसे अभियानों ने युवाओं में नैतिक जागरूकता फैलाई है।
5. इस प्रकार, डिजिटल तकनीक नैतिक शिक्षण को आकर्षक और जीवंत बना सकती है।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में नैतिक शिक्षा

विश्व के अनेक देशों ने नैतिक शिक्षा को अपनी शिक्षा नीतियों का अनिवार्य अंग बनाया है।

- जापान में "मोरल एजुकेशन" प्राथमिक स्तर से ही अनिवार्य है।
- फिनलैंड में शिक्षा का उद्देश्य "गुड सिटिजनशिप" है, जहाँ डिजिटल नैतिकता को विशेष रूप से पढ़ाया जाता है।
- अमेरिका में "Character Education Partnership" कार्यक्रम के तहत स्कूलों में ईमानदारी, सेवा और जिम्मेदारी सिखाई जाती है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 3, February 2026
Impact Factor: 8.2

- सिंगापुर ने "Cyber Wellness Curriculum" शुरू किया है, जो विद्यार्थियों को सुरक्षित और नैतिक ऑनलाइन व्यवहार सिखाता है।

भारत इन वैश्विक मॉडलों से प्रेरणा लेकर अपनी नीतियों में स्थानीय संस्कृति और तकनीकी संदर्भों के अनुसार सुधार कर सकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और शिक्षा में नैतिकता

AI ने शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है — स्वचालित मूल्यांकन, व्यक्तिगत अध्ययन और चैटबॉट्स इसके उदाहरण हैं। लेकिन इसके साथ कई नैतिक प्रश्न भी उठे हैं:

- क्या मशीनें मानवीय निर्णय क्षमता की जगह ले सकती हैं?
- विद्यार्थियों के डेटा का उपयोग किस उद्देश्य से हो रहा है?
- क्या AI पक्षपाती हो सकता है?

इन प्रश्नों का उत्तर "एथिकल AI" की अवधारणा में निहित है। शिक्षा संस्थानों को यह सुनिश्चित करना होगा कि AI का उपयोग पारदर्शी, न्यायसंगत और मानवीय मूल्यों के अनुरूप हो।

AI का सकारात्मक उपयोग – जैसे कि विकलांग छात्रों के लिए सहायक तकनीक, भाषा अनुवाद और वैयक्तिक मार्गदर्शन – शिक्षा को समावेशी बना सकता है, बशर्ते इसका प्रयोग नैतिक मानकों के अनुसार हो।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और नैतिक शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) भारतीय शिक्षा दर्शन की पुनर्परिभाषा है। इसमें कहा गया है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार नहीं, बल्कि "अच्छा मनुष्य" बनाना है। (रास्ट्रीय शिक्षा निति, 2020)

नीति के अनुसार,

- शिक्षा का केंद्र "संपूर्ण व्यक्ति विकास" है।
- पाँच सार्वभौमिक मूल्य — सत्य, प्रेम, अहिंसा, शांति और धर्मात्मकरिता — को आधार बनाया गया है।
- प्रारंभिक स्तर पर "खेल आधारित और मूल्य-आधारित शिक्षण" को अनिवार्य किया गया है।
- शिक्षक प्रशिक्षण में मूल्य शिक्षा और भावनात्मक कौशल का समावेश किया गया है।

इस नीति ने स्पष्ट संदेश दिया है कि डिजिटल युग में भी शिक्षा का लक्ष्य "मानवता और नैतिकता" ही होना चाहिए।

शिक्षक की भूमिका और प्रशिक्षण

शिक्षक नैतिक शिक्षा के वास्तविक वाहक हैं। विद्यार्थी शिक्षक के व्यवहार से ही नैतिकता सीखते हैं।

NEP 2020 के अनुसार, शिक्षकों के लिए सतत प्रशिक्षण कार्यक्रम (CPD) में नैतिक शिक्षण की विधियाँ शामिल की जाएँगी। (रास्ट्रीय शिक्षा निति, 2020)

शिक्षक को केवल ज्ञानदाता नहीं, बल्कि "मूल्य-संवर्धक" बनना होगा। (NCTE, 2023)

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 3, February 2026 Impact Factor: 8.2

डिजिटल युग में शिक्षक को तकनीकी दक्षता के साथ नैतिक विवेक भी आवश्यक है। वह ई-लर्निंग उपकरणों के माध्यम से विद्यार्थियों को ऑनलाइन नैतिकता, डिजिटल सुरक्षा और सहानुभूति सिखा सकता है।

अभिभावक, समाज और डिजिटल संस्कृति की भूमिका

नैतिक शिक्षा का आरंभ घर से होता है। माता-पिता बच्चे के प्रथम गुरु होते हैं। यदि परिवार में ईमानदारी, अनुशासन और संवेदनशीलता का वातावरण हो, तो वही गुण बच्चों में स्वाभाविक रूप से विकसित होते हैं। (कुमार, 2024)

समाज और मीडिया भी नैतिकता के संवाहक हैं। सोशल मीडिया पर सकारात्मक अभियानों, प्रेरक कहानियों और सामूहिक गतिविधियों से डिजिटल संस्कृति को नैतिक दिशा दी जा सकती है।

विद्यालय, परिवार और समाज के संयुक्त प्रयास से ही एक "डिजिटल नैतिक पारिस्थितिकी" विकसित किया जा सकता है।

नीति निर्माण, सुझाव और भविष्य की दिशा

डिजिटल युग में नैतिक शिक्षा को सशक्त बनाने के लिए निम्न कदम उपयोगी हो सकते हैं:

1. नैतिकता आधारित पाठ्यक्रम: हर कक्षा में नैतिक विषयों को अन्य विषयों के साथ एकीकृत किया जाए।
2. मीडिया साक्षरता प्रशिक्षण: विद्यार्थियों को फेक न्यूज़ की पहचान और जिम्मेदार ऑनलाइन व्यवहार सिखाया जाए। (UNESCO, 2025)
3. शिक्षक सशक्तिकरण: नैतिक शिक्षण के लिए विशेष डिजिटल प्रशिक्षण प्रदान किया जाए। (NCTE, 2023)
4. अभिभावक कार्यशालाएँ: घर में डिजिटल अनुशासन और ऑनलाइन नैतिकता पर संवाद हो।
5. एथिकल टेक्नोलॉजी नीति: शिक्षा में AI और डेटा उपयोग के लिए स्पष्ट नैतिक दिशा-निर्देश बनाए जाएँ।
6. यदि ये प्रयास संगठित रूप से लागू किए जाएँ, तो भारत न केवल डिजिटल रूप से, बल्कि नैतिक रूप से भी सशक्त समाज बन सकता है।

निष्कर्ष

डिजिटल युग ने शिक्षा को नए आयाम दिए हैं — यह अब सीमाओं से परे, सर्वसुलभ और गतिशील हो चुकी है। परंतु इस तेज़ी के साथ नैतिकता का संतुलन बनाए रखना सबसे बड़ी चुनौती है। नैतिक शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को केवल सफल नहीं, बल्कि "सार्थक" बनाना है। भारत की शिक्षा प्रणाली में यदि नैतिकता को तकनीकी ज्ञान के समान महत्व दिया जाए, तो नई पीढ़ी न केवल डिजिटल दक्ष होगी, बल्कि सामाजिक रूप से उत्तरदायी भी बनेगी। इसलिए शिक्षक, अभिभावक और नीति-निर्माताओं का संयुक्त दायित्व है कि वे तकनीक को नैतिक मूल्यों का साधन बनाएँ, साध्य नहीं। यही संतुलन हमें एक मानवीय और नैतिक रूप से समृद्ध डिजिटल भारत की ओर ले जाएगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. Hassan, M. J. (2023). Some Moral Issues in School Education in India. International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR), 5(6).

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 3, February 2026 Impact Factor: 8.2

https://www.ijfmr.com/papers/2023/6/11058.pdf

2. Kumar, R. (2024). शिक्षा में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता [The Relevance of Moral Values in Education]. Drishti IAS Blog. Retrieved from https://www.drishtiias.com/hindi/blog/ (kumar, 2025)

3. Kumar, V. (2025). Value Education through Technology: A Case Study of the MiVirtue App.

https://mivirtue.com

4. National Council for Teacher Education (NCTE). (2023). शिक्षा पत्रिका [Shiksha Patrika], 42(1).

https://ncte.gov.in/ncte_new/page/list-of-ncte-publications

5. Rai, S. K., Pallavi, K., & Singh, N. (2025). Implications of NEP 2020 for Value-Based Education. International Journal of Mass Communication.

DOI: 10.22271/27084450.2025.v6.i1a.99

6. Sharma, D. (2025, February 7). Cyber Bullying in the Educational Sector in India. JIMS Blog.

https://www.jagannath.org/blog/cyber-bullying-in-the-educational-sector-in-india/

7. UNESCO. (2024). Digital Learning and Transformation of Education.

https://teachertaskforce.org/events/unesco-digital-learning-week-2024

8. UNESCO. (2025). Media and Information Literacy and Digital Competencies.

https://www.unesco.org/en/weeks/media-information-literacy

9. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 [National Education Policy 2020].

https://www.uniraj.ac.in/National%20Education%20Policy%202020.pdf

10. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। (2024). ई-कंटेंट पोर्टल [E-Contents Portal].

https://educationforallinindia.com/education-portals-in-india-for-2024-25-and-2025-26-key-details-and-deadlines/